मध्यप्रदेश विधानसभा को लेकर कुछ शोध की किये गये है-

इण्डिया स्पेंड ने मध्यप्रदेश के विधानसभा चुनावों पर एक शोध किया था जिसमें पाया गया कि कुल विधायकों की संख्या का सिर्फ 8.4 ही महिला विधायक है। बल्कि 2013-14 से हुई चुनावों में 13 प्रतिशत महिला विधायक थी।

सुझाव -

1. सामाजिक न्याय के अंतर्गत महिलाओं को एक धरातल पर स्थान प्राप्त है। महिलाओं को न्याय से भी दूर रखा जाता है इसके लिये महिलाओं को जागरूक होना चाहिए।
2. सामाजिक एवं राजनीतिक के क्षेत्र में महिलाओं की योग्यतानुसार निर्णय निर्माण प्रक्रिया में सहभागिता सुनिश्चित करना।
3. महिलाओं की जागरूकता के लिये कार्यक्रमों का आयोजन करना चाहिए।
4. म.प्र. की राजनीतिक पार्टियों को महिला प्रत्याशियों की संख्या में वृध्दि करना चाहिये।
5. पंचायती चुनाव में म.प्र. में 33 प्रतिशत आरक्षण प्राप्त है, ठीक इसी प्रकार विधानसभा में भी आरक्षण मिलना चाहिये।

संदर्भ सूची-

1. Burrell, Barbara (2017), Woman and Politics, America, Policy Studies organization.
2. पाण्डेय मृणाल (1987) स्त्री देह की राजनीति से देश की रजानीति तक,दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड।
3. मिश्रा शीला (1989) महिलाओं की राजनीतिक क्रियाशीलता एवं विविध राजनीतिक दल, Uppal public house of William caresa Study research centre and joint woman's programme page 59, 220, 279.
4. नव निर्मित विधायक (2018) Retrieved from http://www.vidhansabha.nic.in
5. खान आरिफ (2018) भारतीय राजनीति में महिला प्रतिनिधित्व की दिशा और दशा, Retrieved from http://www.aarambhpatrica.com
6. http://www.shodhganga.com

******

नगरीय महिलाओं में जनसंचार माध्यमों का प्रभाव

डॉ.महेश शुक्ला
प्राध्यापक समाजशास्त्र
शास.टी.आर.एस. महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.)
एवं
क्षमा दुबे
शोध छात्रा
शास.टी.आर.एस. महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

सारांश

आज की दुनिया जनसंचार माध्यमों की दुनिया है। आज जनसंचार माध्यम के नई तकनीक के मानव जीवन के विविध पक्षों को प्रभावित किया है। पहले जहाँ जनसंचार माध्यम के सीमित साधन थे वहीं वर्तमान समाज में जनसंचार के वैविधतामूलक साधनों का निर्माण हुआ है। आज का समाज विकसित समाज के रूप में जाना जाता है। जनसंचार के साधनों ने जहाँ समाज को आधुनिक संस्कृति की ओर धकेला वहीं जनसंचार माध्यमों के प्रभाव समाज को उत्तर आधुनिकता की ओर विकसित किया है। वास्तव में उत्तर आधुनिकता समाज का आधुनिकतम रूप है। इसकी विचारधारा वह जो आधुनिकता के साथ जुड़े हुये सम्पूर्ण सामाजिक स्वरूपों को ध्वस्त करती है।

प्रस्तुत अध्ययन रीवा नगर की महिलाओं पर केन्द्रित है। इस अध्ययन में यह जानने का प्रयास किया गया है कि नगरीय महिलाओं पर संचार के साधनों का कितना प्रभाव पड़ रहा है।

मुख्य शब्द- *जन संचार के साधन,उत्तर आधुनिक समाज,महिलायें एवं जन-माध्यम।*

समाज वैज्ञानिकी अक्टूबर-मार्च 2020-21
अंक-33-34, ISSN 0973-4201
भारतीय समाज विज्ञान परिषद्

जनसंजार ने एक झूठे समाज के प्रति एक झूठ उपभोग समाज तैयार कर दिया है। आज बाजार में प्रोडक्ट नहीं संकेत दिखते हैं स्थित यह है कि यथार्थ और अयथार्थ का अंतर ही समाप्त हो गया है। वह पूँजीवाद का नया अवतार हे। जनसंचार के माध्यमों ने पूरे सामाजिक जीवन के विविध पक्षों को प्रभावित किया है। भारत में आजादी के पहले जनसंचार साधनों का सीमित रूप था। लेकिन आज जनसंचार कई रूपों में मनुष्य के सपनों के ताने बाने बुन रहा है। आजादी की लड़ाई में अखबारों का महत्वपूर्ण योगदान था। भारत में अखबार ही तब जनसंचार का माध्यम था। जनसंचार माध्यमों के विकास में पश्चिमी देशों की तुलना में भारत काफी पीछे है। लेकिन जितनी तेजी से यह अपने विकसित रूप में आ रहा है उससे अनेक संभावनायें पैदा हो रही हैं।

आज भारतीय समाज में अखबार, पत्रिकाएं, रेडियो, टेलीविजन, विविध चैनल, इंटरनेट , टेलीफोन, मोबाइल फोन आदि प्रमुख रूप से भारतीय समाज के अंग बन चुके हैं। पहले जनसंचार माध्यम जहाँ आजादी और जन आंदोलन के प्रतीक थे वहीं आज पूरी तरह से व्यावसायिकता में सँवर गए हैं। जनसंचार के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन के सशक्त साधन के रूप में जाना जाता है। जैसे-जैसे भारतीय समाज में साक्षरता का विकास हुआ है। वैसे-वैसे जनसंचार साधनों के प्रति लोगों का रूझान बढ़ता जा रहा है। बच्चों से लेकर बुजुर्ग सभी जनसंचार के साधनों के प्रयोग में फंस चुके हैं। चाहे ग्रामीण समाज हो या नगरीय समाज हर जगह इनके प्रभावों को देखा जा सकता है। भारतीय महिलाएँ आजादी के आंदोलन के समय से ही नवाचार की ओर अग्रसर हो गई थी।

आजादी के बाद सामाजिक आंदोलन और बढ़ती शिक्षा के प्रभावों ने उन्हें मजबूत इरादों वाले व्यक्तित्व में ढोल दिया। ग्रामीण समाज में आज महिलाओं की स्थिति कमजोर है लेकिन नगरीय महिलाओं के जीवन में नगरीय समाज ने उनके जीवन को वैविधतापूर्ण बना दिया है। महिलाओं का बहुत बड़ा योगदान है। नगरीय समाज की महिलाओं के जीवन में विविध पक्षों पर जनसंचार माध्यमों का प्रभाव देखा जा सकता है। सुबह के अखबार, रेडियों से लेकर टेलीविजन के विविध चैनल, दूरसंचार के विविध साधन, सोशल मीडिया के विविध रूपों का प्रभाव इनके जीवन में देखा जा सकता है।

दूरसंचार और सोशल मीडिया के प्रभावों ने इनके जीवन को गतिशील बनाया है। पत्र-पत्रिकाओं और अखबार के माध्यमों से ये अपने अधिकारों के प्रति सेचत हुई हैं। नगरीय महिलाओं में जनसंचार के सकारात्मक और नकारात्मक दोनों तरह के प्रभावों का आंकलन किया जा सकता है। एक ओर जहाँ इन साधनों के माध्यम से वे अपने अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति जागरूक हुई हैं वही नगारात्मक प्रभाव ने इनके अंदर वैयक्तिकता कृत्रिम जीवन एवं सार्वजनिक दायरें को प्रभावित किया है। आज के दौर में नगरीय महिलायें जनसंचार माध्यमों के द्वारा अपनी भूमिका को ज्यादा बेहतर तरीके से प्रस्तुत कर पा रही हैं।

अवधारणात्मक विश्लेषण-

जनसंचार माध्यमों का प्रभाव नगरीय महिलाओं के साथ-साथ समाज के सभी लोगों पर प्रभाव डाल रहे है यह जनसंचार जब तक सकारात्मक ढंग से प्रयोग किया जाए तब तक यह हमारे हित में है लेकिन जहाँ जनसंचार माध्यमों का प्रयोग गलत तरीकों से या गलत कार्य के लिये प्रयोग होने लगे वहाँ इसके कई घातक परिणाम भी शोध के रूपों में हमारे सामने आए है। यह एक सीमा या दायरे में रहकर समाज के सभी लोगों को प्रयोग करना चाहिए एवं वास्तविकता को नहीं भूलना चाहिए। जनसंचार माध्यमों केा द्वारा जीवन दिखावे की ओर ज्यादा अग्रसर है।

अध्ययन उद्देश्य -

जनसंचार माध्यम का मुख्य उद्देश्य सूचनाएं पहुँचाना होता है लेकिन जब आप रेडियों सुनते है या टेलीविजन देखते है तो उसमें कार्यक्रमों का बहुत बड़ा हिस्सा मनोरंजन को ध्यान में रखकर प्रसारित किया जाता है। इस अध्ययन के कुछ प्रमुख उद्देश्य निम्नांकित हैः-

1. सूचना देना।
2. शिक्षित करना।
3. मनोरंजन करना।
4. एजेंडा तय करना।
5. विचार-विमर्श के लिए मंच उपलब्ध कराना।

अध्ययन क्षेत्र -

प्रस्तुत अध्ययन रीवा जिले पर केन्द्रित है। रीवा नगर विंध्यन कगारी प्रदेश के मध्यवर्ती पर $24^0.42$ उत्तरी अक्षांश एवं $81^0.15$ पूर्वी देशांतर पर बीहर एवं बिछिया नदी के संगम पर स्थित है। इसका नमाकरण पवित्र रेखा नदी के नाद पर प्रतिष्ठित हुआ है। प्रस्तुत अध्ययन नगरीय महिलाओं पर केन्द्रित है। इस अध्ययन में रीवा नगरक` विभिन्न कॉलोनियों में रहने वाली शिक्षित महिलाओं को सम्मिलित किया गया है।

पूर्व साहित्य की समीक्षा-

जवरीमल्ल पारख (2001) का अध्ययन जनसंचार के कई पहलुओं और सामाजिक संदर्भों को छूती हैं। इनका मानना है कि जनसंचार माध्यमों का संबंध सामाजिक परिवर्तन से बहुत गहरा है। जहाँ एक ओर जनसंचार का विकास, समाज के विकास का परिणाम है वहीं वह सामाजिक विकास को

प्रभावित भी करता है। लेकिन समाज के विकास का परिणाम है वहीं वह सामाजिक विकास को प्रभावित भी करता है। लेकिन समाज और जनसंचार के संबंधों की इस आधारभूत धारणा को सरलीकृत रूप में नहीं समझा जा सकता है। टेलीविजन का ही उदाहरण लें, यह ऐसा माध्यम है जो अपनी दृश्य-श्रव्य, शक्ति के कारण एक साथ करोड़ों लोगों को प्रभावित कर सकता है। यह एक माने में सिनेमा से ज्यादा खतरनाक साबित हो सकता है।

जनसंचार के टेलीविजन स्वरूप ने दृश्य माध्यमों को इतना सुलभ बना दिया है कि किसी कला के आस्वादन के लिये किये जाने वाले प्रयत्न के लिये भी कोई जगह नहीं बची है। जब चाहे बटन दबाएँ टी.वी. ऑन करें और कार्यक्रम देखें। कई चैनलों के अंबार में यह तय करना मुश्किल हो रहा है कि क्या देखें और क्या न देखें। लेकिन क्या जीवन का यही अर्थ रह गया है कि खाओं, पिया और टी.वी. देखो। टी.वी. के रूपहले पर्दे पर पूरी दुनिया की खबरें हर वर्ग के लिये मनोरंजन और चाही गई सारी मांगें इसमें मौजूद है न हमें सोचने की जरूरत और न करने की जरूरत। जनसंचार के साधनों ने हर वर्ग के साथ महिलाओं के ऊपर भी गहरा प्रभाव पड़ा है। एक ओर जहां यह छबि निखारने का कार्य करता है वहीं दूसरी ओर छबि धूमिल करने में भी कोई कसर नहीं छोड़ता।

डॉ. निभा सिन्हा (2016) - ने अपने अध्ययन में पाया कि महिलाओं की सामाजिक स्थिति में सुधार को लेकर लम्बे समय से वैश्विक स्तर पर चिंता व्यक्त की जा रही है और समय-समय पर इसके लिये कदम उठाए गए हैं। देश में आजादी के बाद से नीति-निर्माताओं ने मुख्य धारा की मीडिया, रेडियो, टेलीविजन और समाचार पत्रों से महिलाओं की सामाजिक स्थिति में सुधार लाने की उम्मीद की। लेकिन इस मीडिया ने यथास्थिति को ही बनाये रखा और महिलाओं की सामाजिक स्थिति में बहुत सकारात्मक परिणाम आते हुये नहीं दिखे। आज डिजिटल क्रांति के युग में नई मीडिया से एक नई उम्मीद बनी है कि यह एक ऐसा प्लेटफार्म है जिससे महिलाओं की स्थिति में सुधार की संभावना काफी हद तक की जा रही है।

डॉ. महेश शुक्ला (2001)-विन्ध्य की पत्रकारिता के विविध आयाम की पुस्तक में पत्रिकारिता के विभिन्न प्रभावों का आंकलन किया गया है। लेखक ने इस किताब में अपने ध्येय को स्पष्ट करते हुये कहते हैं कि पत्रकारिता मनुष्य की जिज्ञासा का एक अंग है दुनिया के रहस्यों को जानने की प्राबल उत्कण्ठा मनुष्य को विचारशील बनाया। उसकी विचारशीलता एक जगह रूकी नहीं बल्कि नित नए आयामों और सोपानों में ढलती गई अपने सोचने की प्रवृत्ति से जहाँ एक ओर विज्ञान के नए युग का सूत्रपात किया वहीं दूसरी ओर मानसिक व वैचारिक खुराग के लिये पत्रकारिता जैसे साधनों का भी निर्माण किया। पत्रकारिता समाज की विविधता का दर्पण है जिसके अंदर जमीनी सच्चाई और झाँकी दिखाई देती

है। पत्रकारिता ने कई गूढ़ और अनछुए रहस्य को जहाँ सुलझाने में मदद की है। वहीं भ्रष्ट बेईमान और पाखण्डी लोगों के मुखौटे उतार कर समाज के सामने उनकी पोलें भी खोली हैं।

लेखक ने इस किताब में पत्रकारिता के राष्ट्रीय प्रभावों के साथ विन्ध्य क्षेत्र पर होने वाले प्रभावों का भी आंकलन किया है। राजनैतिक पुनर्जागरण, स्वतंत्रता आंदोलन, शोषित एवं दलित समाज के उन्नयन में, मानव मूल्यों की प्रतिस्थापना में पत्रकारिता के योगदान को बारीकी के साथ समझाया है।

पत्रकारिता किस तरह से भारतीय समाज के विभिन्न पक्षों के ऊपर पड़ने वाले प्रभावों का आंकलन करती हैं इसका सजीव चित्रण इस पुस्तक में मिलता है। समाज की अविभाज्य अंग महिलाओं के सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनैतिक उन्नयन में पत्रकारिता ने किस तरह से प्रभावित किया है इसका उल्लेख भी इस पुस्तक में किया गया है।

विंध्य क्षेत्र एक पिछड़ा हुआ राज्य माना जाता था लेकिन आजादी की लड़ाई में यहाँ की सामाजिक और सांस्कृतिक जागरूकता ने जिस तरह से प्रभावी भूमिका को प्रस्तुत किया है उसमें पत्रकारिता का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। यहाँ की महिलाओं के सामाजिक सांस्कृतिक विकास में पत्रकारिता की समर्थ भूमिका रही है।

जार्ज ए. मिलर के अनुसार - जनसंचार वृकृति, विशाल तथा विषम होता है लोगों तक एक साथ संदेश पहुँचाना है।

दि कम्युनिकेशन नामक पुस्तक के अनुसार - वह असंख्य ढंग जिससे मानवता से जुड़े रह सकें। नृत्य या गायन द्वारा मुद्रण या प्रेस द्वारा नाटक या लोकनृत्य द्वारा, इशारों या अंग प्रदर्शन द्वारा, आंखों और कानों तक पहुँचाना ही जनसंचार कहलाता है।

चार्ल्स आर.राइट के अनुसार- जनसंचार एक ऐसा माध्यम है जो लोगों तक सूचना प्रक्रिया पहुँचाती है।

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि यद्यपि विद्वानों का दृष्टिकोण अलग-अलग है लेकिन विभिन्न परिभाषाओं के आधार पर यह कहा जा सकता है कि जनसंचार किसी न किसी रूप में हम तक सूचना पहुँचाता है और समाज के सभी वर्ग के लोगों को प्रभावित भी करता है।

शोध प्रविधि -

समाज विज्ञान में किसी भी समस्या के अध्ययन के लिए एक विशिष्ट पध्दति होती है। इस पध्दति से अध्ययन को कई चरणों में बांटकर हम अपने लक्ष्य को प्रापत करते हैं। अध्ययन की प्रकृति

के अनुसार हम शोध तकनीक, उपकरणों प्रविधियों का चुनाव करते है।। प्रास्तुत अध्ययन को तार्किक अंग यथार्थपूर्ण बनाने के लिये वैज्ञानिक प्रविधियों का प्रयोग किया जायेगा। प्रस्तुत अध्ययनरत का स्वरूप ज्ञान प्राप्ति के उपागम के आधार पर सर्वेक्षण एवं मूल्यांकनात्मक अनुसंधान के लिए अन्वेषणात्मक एवं विवरणात्मक अनुसंधान का हागा। इस स्वरूप को वैज्ञानिक बनाने के लिये साक्षात्कार अवलोकन आदि प्रविधि का प्रयोग किया जायेगा।

नगरीय महिलाओं में जनसंचार माध्यमों के प्रभाव को तालिका के द्वारा दर्शाया गया है।

तालिका क्रमांक-1

जनसंचार माध्यमों का प्रयोग

क्रं.	जनसंचार माध्यमों की जानकारी	संख्या	प्रतिशत
1.	माध्यमों का प्रयोग करने वाले	316	63.2
2.	माध्यमों का प्रयोग न करने वाले	84	16.8
3.	उत्तर न देने वाले	100	20
	योग	500	100

इस प्रकार तालिका के अनुसार लोग जनसंचार माध्यमों का प्रयोग 316 करते है और जो नहीं करते उनके आँकड़े दर्शाए गए हैं। 84 और जो उत्तर नहीं देते हैं उनकी संख्या 100 है।

तालिका क्रमांक-2

जनसंचार माध्यमों के प्रकार

क्रं.	जनसंचार माध्यमों के प्रकार	संख्या	प्रतिशत
1.	समाचार पत्र	160	32
2.	पत्रिकाएँ	52	10.4
3.	रेडियो	22	4.4
4.	सोशल मीडिया	84	16.8
5.	केबल टी.वी.	108	21.6
6.	अन्य	2	0.4
7.	प्रयोग करने वाले	72	14.4
	योग	500	100

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि जनसंचार के माध्यमों के प्रकार में सर्वाधिक प्रयोग होने वाला

माध्यम समाचार पत्र है जो 32% लोगों द्वारा प्रयोग किया जाता है। इसी प्रकार आगे की श्रेणी में पत्रिकाएँ 10.4%, रेडियो 4.4% लोगों द्वारा एवं सोशल मीडिया 16.8% केबल टी.वी. 21.6% और अन्य साधन 0.4% लोग प्रयोग करते है। इस तालिका के द्वारा यह स्पष्ट होता है कि लिखित सूचना का प्रभाव अधिक है। 14.4% लोग ऐसे भी है जो इसका प्रयोग नहीं करते हैं।

तालिका क्रमांक-3

जनसंचार माध्यमों के प्रकार

क्रं.	प्रभाव	संख्या	प्रतिशत
1.	सकारात्मक ढंग से	156	31.2
2.	नकारात्मक ढंग से	12	2.4
3.	दोनों तरह से	168	33.6
4.	प्रभावित न होने वाले	164	32.8
	योग	500	100

उपर्युक्त तालिका में जनसंचार माध्यमों के प्रभावों के बारे में जानकारी ली गई जिससे 33.6% लोग सकारात्मक व नकारात्मक दोनों से प्रभावित माने गए। जबकि सकारात्मक प्रभाव 31.2% लोगों पर व नकारात्मक प्रभाव 2.4% मात्र पाया गया। प्रभावित न होने वालों का प्रतिशत 32.8% है।

तालिका क्रमांक-4

जनसंचार साधनों के प्रयोग से लोगों के व्यक्तिगत विचारों की जानकारी

क्रं.	व्यक्तिगत विचारों पर प्रभाव	संख्या	प्रतिशत
1.	व्यक्तिगत विचारों को व्यक्त करने वाली	276	55.2
2.	विचारों को व्यक्त न करने वाली महिलाएँ	132	26.4
3.	जवाब न देने वाली महिलाएँ	92	18.4
	योग	500	100

इस तालिका के अनुसार जो महिलाएँ जनसंचार माध्यमों का प्रयोग कर अपने विचारों को व्यक्त कर पाती है उनकी संख्या 276 है तथा विचार व्यक्त करने में असमर्थ है उनकी संख्या 132 है। जो महिलाएँ इस जनसंचार माध्यमों में कोई रूचि नहीं रखती है उनकी संख्या 92 है। ज्यादातर महिलाएँ अपने विचारों को प्राकट करने में सफल हैं।

तालिका क्रमांक-5

जनसंचार माध्यमों के सकारात्मक प्रभावों का तथ्यात्मक विवरण

क्रं.	सूचना का विवरण	संख्या	प्रतिशत
1.	सूचना शीघ्रता से प्राप्त	288	57.6
2.	सूचना शीघ्रता से प्राप्त नहीं	12	2.4
3.	उत्तर न देने वाले	200	40
	योग	500	100

उपर्युक्त तालिका से 57.6% का मानना है कि सूचनाएँ शीघ्र प्राप्त हो जाती है जबकि 2.4% महिलाओं का मानना है कि सूचना शीघ्रता से प्राप्त नहीं होती है। जबकि उत्तर न देने वाली महिलाओं में 40% महिलाएँ सहमत है।

निष्कर्ष एवं सुझाव -

नगरीय महिलाओं जनसंचार के माध्यमों के प्रभावों से संबंधित बहुत सारे अध्ययन हुए हैं। इन अध्ययनों के कुछ प्रमुख अध्ययनों का उपरोक्त विश्लेषण किया गया है। उपरोक्त संदर्भग्रंथों में समाज पर जनसंचार के विभिन्न प्रभावों का आंकलन किया गया है ये प्रभाव समाज में रहने वाले हर वर्ग के ऊपर दृष्टिगोचर होता है। नगरीय समाज विकसित और आधुनिक समाज होता है। अतरु नगरीय महिलाओं के जीवन के विविध पक्षों पर जनसंचार के विविध आयाम अलग-अलग रूपों में प्रभावित करते हैं। यह प्रभाव सकारात्मक व नकारात्मक दोनों होता है। सकारात्मक प्रभाव जहाँ व्यक्तित्व को सार्वभौमिक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। वहीं नकारात्मक प्रभाव वैयक्तिक और सामाजिक विघटन को बढ़ावा देती है।

जनसंचार में सबसे महत्वपूर्ण कड़ी है-संचार, संचार जो एक से दूसरे में आसानी से प्राप्त हो। जिससे सूचना का आदान-प्रदान आसानी से हो। सूचना की सत्यता का विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए। सूचना प्रभावशाली हो जिससे लोग ज्ञान प्राप्त कर सकें एवं सरल हो जिससे सभी वर्ग तक आसानी से पहुँच सकें।

संदर्भ सूची-

1. जीन बॉड्रिलार्ड, (1970), *कंज्यूमर सोसायटी*, ऑक्सफोर्ड पब्लिकेशन।
2. जवरीमल्ल पाराव, (2001), *जनसंचार के सामाजिक संदर्भ* ,अनामिका पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली।
3. डॉ. महेश शुक्ला, (2001), *विंध्य की पत्रकारिता के विविध आयाम* कॉमन वेल्थ पब्लिकेशन, नई दिल्ली।

******

महिलाओं पर सोशल मीडिया का प्रभाव

डॉ.महेश शुक्ला

प्राध्यापक समाजशास्त्र

शास.टी.आर.एस. महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

एवं

क्षमा दुबे

शोध छात्रा,समाजशास्त्र

शास.टी.आर.एस. महाविद्यालय, रीवा

सारांश

आज मीडिया एक अत्याधिक प्रभावशाली माध्यम बन चुका है जिसकी पहुँच एक साथ करोड़ो लोगों तक है। आधुनिक तकनीकी ने महिला ओर पुरूष, युवा ओर वृध्द सभी पर मीडिया के प्रभाव को अत्यधिक बढ़ा दिया है। प्रिंट मीडिया, रेडियो, टी.वी. फिल्में और इंटरनेट ये सभी मीडिया के घटक हैं। वहीं महिलाएँ विश्व की आधी आबादी हैं इसलिए उनके द्वारा मीडिया का प्रयोग और उन पर सोशल मीडिया के प्रभाव संबंधी बिन्दुओं की अनदेखी नहीं की जा सकती है।

आधुनिक समय में भारतीय महिलाओं के जीवन में मीडिया की महत्वपूर्ण भूमिका सिध्द हो रही है। मीडिया ने महिलाओं की स्थिति को दुनिया से जोड़ने का कार्य किया है और अपनी और दुनिया के ध्यान को आकर्षित किया है। पारंपरिक भारतीय समाज में लैंगिक असमानता और भेदभाव, सदियों से चला आ रहा है मीडिया ने इसे भी प्रभावित कर महिलाओं को समानता का दर्जा प्रदान किया है। आज मीडिया जगत में महिलाओं के आत्मविश्वास और पक्षता के साथ आगे बढ़ रही है व मोर्चा संभाल रही हैं। यह एक ऐसा लोकतांत्रिक मंच है जहाँ महिलाएँ अपनी बातें आसानी से एक बड़ी जनसंख्या के सामने बगैर किसी प्रतिबंध के रख सकती हे। लोकतंत्र को वह चौथा स्तंभ है जिसका महिला सशक्तीकरण में अहम भूमिका है।

मुख्य शब्द- *भारतीय महिलायें एवं मीडिया,महिला सशक्तीकरण,*

समाज वैज्ञानिकी अक्टूबर-मार्च 2020-21
अंक-33-34, ISSN 0973-4201
भारतीय समाज विज्ञान परिषद्